B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur

Department of History

Topic : Sources of Ancient Indian History

Prepared by : Sri Pinku kumar
Asst. Professor (Dept. of History)
B.N. College Bhagalpur
Contact (whatsApp) no- 7982166260
Email id- kpinku348@gmail.com

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालने वाले स्रोत को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

- साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)
- पुरातात्विक स्रोत (Archaeological Sources)
- विदेशी यात्री के वृतांत (Account of Foreigners)

साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

अध्ययन की सुविधा के लिए साहित्यिक स्रोत को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है – पहला धार्मिक साहित्य और दूसरा धर्मनिरपेक्ष साहित्य।

धार्मिक साहित्य (Religious Literature)

- धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत वे ग्रन्थ आते हैं, जो किसी धर्म विशेष से प्रभावित होते हैं।
- इन ग्रन्थों से तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।

अध्ययन की सुविधा के लिए धार्मिक साहित्य को भी तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

- ब्राह्मण साहित्य,
- बौद्ध साहित्य तथा
- जैन साहित्य।

ब्राह्मण साहित्य

- प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालने वाले ब्राह्मण धर्म से संबंधित अनेक ग्रन्थ मौजूद हैं, जिनमें प्रमुख निम्न हैं-
- वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, स्मृतियाँ, उपनिषद, वेदांग, सूत्र साहित्य व पुराण आदि हैं।
- वेद - आर्यों के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। वेदों की कुल संख्या चार है - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।
- स्मृतियों से तत्कालीन समाज के विभिन्न कार्यकलापों पर प्रकाश पड़ता है। प्रमुख स्मृतियाँ हैं -मनु, याज्ञवल्क्य, पाराशर, नारद, वृहस्पति, कात्यायन तथा गौतम।

ब्राह्मण साहित्य-1

- उपनिषदों से भारतीय दर्शन व बिम्बसार के पूर्व के इतिहास का विवरण प्राप्त होता है। प्रमुख उपनिषद् हैं- ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डुक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, कौषितिकि, वृहदारण्यक और श्वेताश्वतर।
- वेदांग की संख्या छह हैं- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। वेदांगों से तत्कालीन समाज एवं धर्म पर प्रकाश पड़ता है।
- ब्राह्मण साहित्य में पुराण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । पुराणों की संख्या अठ्ठारह है- मत्स्य, भागवत, विष्णु, वायु, आदि ।
- महाकाव्य दो हैं रामायण और महाभारत। इन दोनों महाकाव्यों से तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक जीवन को समझने में सहायता प्रदान करता है।

बौद्ध साहित्य

- ब्राह्मण साहित्य के समान ही बौद्ध साहित्य में भी प्राचीन भारतीय इतिहास पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। बौद्ध धर्म से संबंधित अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनमें प्रमुख निम्न हैं -
- त्रिपिटक, जातक कथाएँ, बुद्धचरितम्, महावंश और दीपवंश, मिलिन्दपन्हों, दिव्यावदान, अंगुत्तर निकाय आदि।
- त्रिपिटक- त्रिपिटकों की संख्या तीन है- विनय पिटक, सुत्त पिटक एवं अभिधम्म पिटक।
- विनय पिटक' में बौद्ध संघ के नियमों का उल्लेख है, 'सुत्त पिटक' में महात्मा बुद्ध के उपदेश संकलित हैं तथा 'अभिधम्म पिटक' में बौद्ध दर्शन का विवेचन है।

बौद्ध साहित्य-1

- जातक कथाएं- जातक कथाओं में महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्मों की काल्पनिक कथाएं हैं। काल्पनिक होने पर भी ये कथाएं अपने समय और उससे पूर्व के समाज का चित्रण हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं।
- बुद्धचरितम्- बुद्धचरितम् के रचयिता महाकवि अश्वघोष थे। इस ग्रन्थ से गौतम बुद्ध के जीवन चरित्र की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।
- महावंश और दीपवंश- इन दोनों ही ग्रंथों से भारत के प्राचीन इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।
- अंगुत्तर निकाय- इस प्रन्थ से हमें सोलह महाजनपदों की जानकारी मिलती है।

जैन साहित्य

- प्राचीन भारतीय इतिहास को समझने में जैन साहित्य का विशेष महत्व है। जैन साहित्य से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रन्थ निम्न हैं-
- आगम- आदि जैन ग्रन्थों को 'आगम' के नाम से जाना जाता है। बाद में उनका संकलन 'पूर्व' नामक 14 ग्रंथों में किया गया तत्पश्चात उनका संकलन 'अंग' नामक 12 ग्रन्थों में हुआ, जिनके नाम हैं- आचारांग, डाण्डंग, भगवती सुत्त आदि।
- भद्रबाहुचरित- इस ग्रन्थ से मौर्यवंशीय शासक चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यकाल की कुछ घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है।
- परिशिष्ट पर्व- इस ग्रन्थ से महावीर स्वामी के काल के राजाओं व अन्य जैन सम्राटों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

धर्मनिरपेक्ष साहित्य

- धर्मनिरपेक्ष साहित्य संबंधी ग्रन्थों से प्राचीन भारत के विषय में मुहत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। धर्मेत्तर साहित्य से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रन्थ निम्न हैं-
- कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, बाणभट्ट का हर्षचरित, पतंजलि का महाभाष्य, पाणिनी की अष्टाध्यायी, कल्हण की राजतरंगिणी, विल्हण का विक्रमांकदेवचरित, चन्दवरदायी का पृथ्वीराज रासो, कालीदास कृत मालविकाग्निमित्रम,रघुवंशम आदि ।
- अर्थशास्त्र—'अर्थशास्त्र' नामक इस प्रन्थ की रचना चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमन्त्री कौटिल्य ने ई.पू. चौथी शताब्दी में की थी। इस ग्रन्थ से तत्कालीन शासन-व्यवस्था के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है।
- मुद्राराक्षस- इस ग्रन्थ से नन्द वंश के पतन और चन्द्रगुप्त मौर्य को राजा बनाए जाने के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- हर्षचरित- इस ग्रन्थ की रचना सातवीं शताब्दी में की गई थी। इस ग्रन्थ से हर्षकालीन घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है।
- महाभाष्य- इस ग्रन्थ से मौर्य वंश और शुंग वंश के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

धर्मनिरपेक्ष साहित्य-1

- अष्टाध्यायी- इस ग्रन्थ से मौर्य काल के पूर्व की राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है।
- गार्गी संहिता- इस ग्रन्थ से भारत पर यवनों के आक्रमण की जानकारी प्राप्त होती है।
- राजतरंगिणी- इस ग्रन्थ की रचना बारहवीं शताब्दी में हुई थी। इस ग्रन्थ से कश्मीर के इतिहास के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।।
- मालविका अग्निमित्रम- इस ग्रंथ से पुष्यमित्र शृंग और यवनों के मध्य हुए संघर्ष के विषय में जानकारी मिलती है।
- रघुवंशम- इस ग्रंथ से गुप्तवंशीय सम्राट समुद्रगुप्त की दिग्विजय की झलक मिलती है।
- पृथ्वीराज रासो- इस ग्रन्थ से चौहानवंशीय शासक पृथ्वीराज चौहान के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

विदेशी यात्रियों के वृतान्त

- विदेशी यात्रियों के यात्रा विवरणों से प्राचीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन के बारे में व्यापक जानकारी प्राप्त होती है।

टॉलमी - यूनानी लेखक टॉलमी (Ptolemy) ने दूसरी शताब्दी ई. में भारत का भौगोलिक वर्णन किया, जिससे अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

प्लिनी - यूनानी लेखक प्लिनी (Pliny) द्वारा रचित 'नेचुरल हिस्ट्री' में भारतीय पशुओं, पौधों और खनिज पदार्थों के बारे में जानकारी मिलती है

- फाह्यान पाँचवीं शताब्दी ई. में भारत आए थे, वे लगभग 14 वर्षों तक भारत में रहे। उन्होंने विशेष रूप से भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के बारे में लिखा ।

विदेशी यात्रियों के वृतान्त-1

व्हेनसांग, हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत आए थे, वे लगभग 16 वर्षों तक भारत में रहे। व्हेनसांग ने भारत की धार्मिक अवस्था के साथ-साथ तत्कालीन राजनीतिक दशा का भी वर्णन अपने वृतान्त में किया है।

- इत्सिंग सातवीं शताब्दी ईसवी में भारत आए थे, वे बहुत समय तक विक्रमशीला विश्वविद्यालय तथा नालंदा विश्वविद्यालय में रहे। उन्होंने भारतीयों की वेश-भूषा, खान-पान आदि के विषय में भी लिखा है।
- अल्बरूनी - अरब यात्री अल्बरूनी ने 'तहकीक-ए -हिन्द' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। उन्होंने अपनी इस पुस्तक में ग्यारहवीं शताब्दी ई. के भारत की दशा पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

पुरातात्विक स्त्रोत

- प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए पुरातात्विक स्त्रोत, साहित्यिक स्त्रोतों से अधिक प्रामाणिक माने जाते हैं, क्योंकि उनमें कवि की परिकल्पना अथवा लेखक की कल्पना शक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है।
- प्रमुख पुरातात्विक स्त्रोत हैं- अभिलेख, स्मारक और भग्नावशेष, मुद्राएं तथा मृद्भांड आदि।
- अभिलेख- अभिलेख, प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के महत्त्वपूर्ण और प्रामाणिक स्त्रोत माने जाते हैं, क्योंकि अभिलेख समकालीन होते हैं।
- सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य शासक अशोक के हैं। अशोक के अधिकांश अभिलेख 'ब्राह्मी लिपि' में हैं। अशोक के अभिलेखों से तत्कालीन धर्म और राजत्व के आदर्श पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

पुरातात्विक स्त्रोत-1

- मौर्य सम्राट अशोक के बाद के अभिलेखों को मुख्यतः दो वर्गों अर्थात सरकारी और निजी अभिलेखों में बाँटा जा सकता है । सरकारी अभिलेख, राजकवियों द्वारा लिखी हुई प्रशस्तियाँ और भूमि अनुदान पत्र हैं जबकि निजी अभिलेख अधिकांशतः मन्दिरों में या मूर्तियों पर उत्कीर्ण हैं।
- प्राचीन भारत पर प्रकाश डालने वाले अभिलेखों में समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख, कलिंग राजा खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, गौतमी बलश्री का नासिक अभिलेख, रुद्रदामन का गिरनार अभिलेख, स्कन्दगुप्त का भितरी स्तम्भलेख, चन्द्रगुप्त द्वितीय का महरौली लौह स्तम्भ लेख, पुलकेशिन द्वितीय का एहोल अभिलेख आदि काफी महत्वपूर्ण हैं।

स्मारक एवं भग्नावशेष

- स्मारक और भग्नावशेष- प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन में प्राचीन भवनों और भग्नावशेषों का भी विशेष महत्व है।
- यह सत्य है कि स्मारक और भग्नावशेष राजनीतिक स्थिति पर तो विशेष प्रकाश नहीं डालते, परंतु इनसे धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है ।
- प्रत्येक काल के स्मारक और भग्नावशेष उस काल की कला, शैली तथा धर्म के प्रतीक होते हैं। प्राचीन स्मारकों तथा कलाकृतियों की प्राचीनता का अध्ययन करके कालक्रम का भी निर्धारण किया जा सकता है।
- प्राचीन काल के महलों और मन्दिरों की शैली से वास्तुकला के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। उदाहरण के लिए उत्तर भारत के मन्दिरों की अपनी कुछ विशेषताएं हैं, उनकी कला की शैली 'नागर-शैली' कहलाती है। इसी प्रकार दक्षिण भारत के मन्दिरों की कला 'द्रविड़-शैली' कहलाती है ।
-

मुद्राएं व मृद्भांड

- मुद्राएं- प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के पुरातात्विक स्रोतों में मुद्राओं का विशेष महत्व है। अब तक सबसे प्राचीन प्रामाणिक सिक्के जो हमें प्राप्त हुए हैं, वे 'आहत सिक्के' कहलाते हैं।
- इन्हें विभिन्न श्रेणी के राज्य प्रशासक अपना चिन्ह अंकित कर चलाते थे। अतः यह 'पंचमार्क' भी कहलाते थे, ये मुख्यतः चाँदी के थे।
- ये मुद्राएँ तत्कालीन राजनीतिक धार्मिक, आर्थिक स्थिति एवं कला पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं।
- मृद्भांड- इसके अंतर्गत भारत के विभिन्न स्थानों से प्राप्त मिटटी के बर्तन हैं। ये बर्तन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण हैं।
- ये बर्तन कला की दृष्टि से तो उपयोगी हैं ही, साथ ही इनकी मिटटी की जाँच करके उनके कालक्रम को जानने में सहायता मिलती है ।